पेरिस
जनवरी ६, २००८

सन्देश संख्या १३३
बड़ौदा के भक्त अशोक उपाध्याय की समझदारी की ऊर्जा

एक विश्वविद्यालय के कई भूतपूर्व छात्र जो अपने–अपने पेशे में उच्च पदस्थ थे, अपने पुनर्मिलन के अवसर पर बातचीत कर रहे थे और उसी दौरान उनलोगों ने अपने एक पुराने सेवा निवृत्त प्राध्यापक से मिलने का निर्णय किया। प्राध्यापक जी के यहाँ जाकर उनलोगों की बातचीत उनके जीवन एवं काम–काज के दौरान होने वाले तनावों के ऊपर केन्द्रित हो गयी ।

इसी बीच प्राध्यापक महोदय अपने रसोईघर में गए और एक बड़े बर्तन में कॉफी ले आये तथा साथ में कई तरह के प्याले भी थे – कुछ चीनी–मिट्टी के, कुछ शीशे के, कुछ प्लास्टिक के और कुछ क्रिस्टल के । उनमें कुछ महँगे थे, कुछ बहुत सुन्दर थे तो कुछ साधारण । फिर प्राध्यापक महोदय ने अपने भूतपूर्व छात्रों से कॉफी स्वयं लेने का अनुरोध किया ।

जब सभी पूर्ववर्त्ती छात्रों ने अपने–अपने हाथ में कॉफी का प्याला ले लिया तब प्राध्यापक महोदय ने कहा : ''देखो, तुमलोगों ने सुन्दर लगने वाले तथा महँगे प्यालों को तो लिया किन्तु किसी ने भी साधारण एवं सस्ते प्यालों को नहीं लिया । अपने लिए सर्वोत्तम चाहना तुम्हारे लिए (अर्थात् मन के लिए) सामान्य–सी बात है किन्तु जान लो कि यही तुम्हारी समस्याओं एवं तनावों की जननी है । महँगे या साधारण प्याले से कॉफी की गुणवत्ता में कोई अन्तर नहीं पड़ता । फिर भी ज्यादा महँगा प्याला ज्यादा सन्तुि देनेवाला प्रतीत होता है।

जीवन कॉफी है जबकि तुम्हारी नौकरी, धन–सम्पत्ति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्याले हैं । जीवन को धारण करने के लिए ये सभी साधन मात्र हैं । प्याला चाहे जिस किसी भी प्रकार का हो, वह व्यक्ति के जीवन को नहीं दर्शाता और न ही उसके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है । प्यालों की तुलना जो मन की बदमाशी है, से कॉफी का आनन्द अर्थात जीवन की गुणवत्ता समाप्त हो जाती है । मन से मुक्ति ही जीवन की पूर्णता है । क्या पूर्ण सजगता सम्भव है जहाँ मन की गति बिल्कुल न हो ? उसी अवस्था में, जीवन होता है, प्रेम होता है, समझदारी होती है और करुणा होती है । ''मैं–पना'' यानी कि मन का प्रयत्नशैथिल्य की अवस्था में होना ही शान्ति, समन्वय, सामंजस्य, प्रज्ञा एवं समझदारी का सबसे बड़ा कम है । लोभ, भय, ईर्ष्या, कुछ छवियों पर मानसिक निर्भरता और कुछ विशिष्ट बनने की अन्तहीन चिन्ता के कारण मानव चित्तवृत्ति में मिथ्या विभेदकारी प्रक्रिया का अस्तित्व बना रहता है जो सभी प्रकार के तनावों की जननी है और वही जीवन की शान्ति एवं पवित्रता को न कर रही है। कुछ भी न बनो और तब सम्पूर्ण मानवता बन जाओगे । यही परम शान्ति और दिव्यता के परमानन्द में होना है ।

।। जय समझदारी ।।